इकाई 27 प्रतिक्रांति-II : जर्मनी में राष्ट्रीय समाजवाद

इकाई की रूपरेखा

27.0 उद्देश्य

पिछली इकाई में हमने फासीवाद के सामान्य लक्षणों की चर्चा की थी और बताया था कि यह अति दक्षिणपंथी राजनैतिक गठन होता है। पिछली इकाई में इटली और स्पेन की दक्षिणपंथी शासन व्यवस्थाओं का भी जिक्र किया गया था। इस इकाई में जर्मनी में एक विशिष्ट फासीवादी शासन व्यवस्था के रूप में नाजी पार्टी के उदय के बारे में बताया जा रहा है। इसे पढ़ने के बाद आप :

- जर्मन में फासीवाद के उदय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित हो सकेंगे,
- नाजी पार्टी के गठन के लिए जिम्मेदार परिस्थितियों पर विचार कर सकेंगे,
- 1933 में नाजियों के शासन में आने पर जर्मन समाज में आए बदलावों को रेखांकित कर सकेंगे, और
- जर्मन फासीवाद की विशेषताओं को पहचान सकेंगे।

27.1 प्रस्तावना

दक्षिणपंथी शासन व्यवस्थाओं के विचारधारात्मक आधारों को जानना जरूरी है। सभी विचारधाराएं एक जैसी नहीं हैं और इसमें संकीर्णवादी शासन व्यवस्थाओं से लेकर अति फासीवादी शासन को एक साथ नहीं समेटा जा सकता। 1933 में जर्मनी में जो शासन व्यवस्था कायम हुई वह फासीवाद के चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। इस इकाई में आपको 19वीं शताब्दी के जर्मनी के इतिहास में जर्मन फासीवाद के लक्षणों की जानकारी दी जाएगी। इसके बाद 1920 के दशक में जर्मनी में संसदीय प्रजातंत्र के उस संकट पर विचार किया जाएगा जिसके कारण फासीवाद के उदय के लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा हुई। इसमें जर्मन फासीवाद की प्रकृति और इसके कारण जर्मन समाज में आए मूलभूत परिर्वतन की भी चर्चा की गई है।

27.2 पृष्ठभूमि

जर्मनी का नाम लेते ही एडौल्फ हिटलर का नाम जरूर याद आता है परंतु उससे एक ऐसे काले शासन की याद आती है जो दुनिया के इतिहास की सबसे आपराधिक और विनाशकारी शासन व्यवस्था थी। एक ओर द्वितीय विश्वयुद्ध को भड़काने में उसने मदद की तो दूसरी ओर लोगों के कत्लेआम के लिए औद्योगिक प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल किया। युद्ध के दौरान 55 मिलियन लोग मारे गए और हिटलर ने 4 से लेकर 6 मिलियन यूरोपियन यहूदियों और जिप्सियों का कत्लेआम किया। आने वाले दशकों में भी इतिहासकार यह उत्तर ढूंढ रहे होंगे कि क्यों और कैसे इस प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा का जन्म हुआ था जिसने पूरी दुनिया को तबाह कर दिया था। इस इकाई में नाजी शासन व्यवस्था के गठन और मुख्य विशेषताओं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

हमें यह मान कर नहीं चलना चाहिए कि नाजीवाद के सैद्धांतिक और संरचनात्मक लक्षण अनूठे थे और जर्मनी के अतीत से उनका कोई संबंध नहीं था। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इसके कई लक्षण मौजूद थे। कैसर विलियम II (1890-1914) एक प्रतिबद्ध जर्मन साम्राज्यवादी था; उसके शासन काल को विलहेलमाइन युग के नाम से जाना जाता है। इस युग में जर्मन राजनीति में आमूल परिवर्तन आए। उसने बिस्मार्क को बर्खास्त कर दिया और आर्थिक विकास को तेज किया। इस परिवर्तन से कुछ खास तरह की समस्याएं पैदा हुईं जैसे केंद्र सरकार की राज्यों पर वित्तीय निर्भरता; संकीर्णवादी प्रशियन व्यवस्था और वयस्क मताधिकार पर आधारित साम्राज्य के बीच मतभेद के कारण साम्राज्यवादी नीति में आई रूकावट। चूंकि चांसलर संसद के प्रति उत्तरदायी नहीं थे इसलिए वास्तविक निर्णय संसद में नहीं लिए जाते थे। संवैधानिक सुधार के अभाव के कारण राजनैतिक दलों के पास कोई उत्तर नहीं था और इससे सांप्रदायिक और मताग्रही प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिला और भूमिपति और औद्योगिक हितों के कारण राज्य में कामगार वर्ग को शामिल किए जाने के प्रयत्न में समाजवादी संशोधन की सफलता असंभव हो गई। इसके अलावा राज्य नौकरशाही में सैन्यवादी प्रवृत्तियों की मौजूदगी के कारण घरेलू जीवन में भी हुकुम बरदारी की संस्कृति का विकास हुआ। 1893 में सेना की संख्या में 83 हजार की बढ़ोत्तरी कर दी गई और 1913 में इसकी संख्या बढ़कर 780,000 हो गई। व्यवस्था के आंतरिक तनाव का प्रथम विश्व युद्ध के रूप में विस्फोट हुआ।

सैद्धांतिक क्षेत्र में भी नाजी युग के सिद्धांतों की एक मजबूत परम्परा देखने को मिलती है। विलहेलमाइन जर्मन संभ्रांतों में नस्लवाद और समाजवाद कूट-कूट कर भरा हुआ था जिनके लिए *वेल्टपॉलिटिक* मुहावरा शक्तिशाली बनने और दुनिया के नक्शे पर छाने की महत्वाकांक्षा को प्रदर्शित करता है। 1900 के अन्त में बॉक्सर विद्रोह के दौरान अपनी सेना भेजते समय कैसर ने हूनों की तरह व्यवहार करने की सलाह दी थी। 1880 के बाद जर्मनी भाषी दुनिया में शामी विरोधी राजनीति का उदय हुआ; रूस में भी कुछ इसी प्रकार की प्रवृत्ति का विकास हो रहा था। वियेना में क्रिशचन सोसलिस्ट मेयर ने सामाजिक और प्रशासनिक सुधारों को एक साथ मिलाते हुए सभी प्रकार की बुराइयों के लिए यहूदियों को बलि का बकरा बनाया। बर्लिन में न्यायालय प्रमुख एडौल्फ स्टॉकर ने बर्लिन में प्रोटेसटेंट क्रिशचन सामाजिक आन्दोलन का नेतृत्व किया और मौजूदा आर्थिक व्यवस्था पर आक्रमण करने के लिए शामी विरोधी और शुद्धतावादी हथियारों का प्रयोग किया।

प्रथम विश्व युद्ध शुरू होने के समय मुख्य धारा में शामिल जर्मन समाजवादी आंदोलन सरकार के युद्ध-उद्देश्यों से सहमत हो गया था। वे इस बात से आश्वस्त हो गए थे कि जर्मनी को प्रतिक्रियावादी रूसी अभिजात तंत्र से बचाना है और उन्होंने कैसर के पवित्र गृह शांति अभियान में उसका साथ दिया। अतिवामपंथी दल के अलावा जर्मन समाजवाद उस समय के देशभक्ति के जुनून में बह गया। यहां एक बात जान लेनी चाहिए कि इस अंध देशभक्ति की भावना को एक लोकप्रिय आधार प्राप्त था और इस परिप्रेक्ष्य में युद्धोतर काल में उग्रराष्ट्रवादी जन उत्तेजना की गूंज सुनाई पड़ी और उनके कार्यक्रमों को समर्थन प्राप्त हुआ।

27.3 युद्ध के बाद जर्मन राजनीति

वाइमार गणतंत्र (इसकी चर्चा हम इकाई 25 में कर चुके हैं) का जन्म सेना की पराजय और प्रशासनिक असफलता के बीच से हुआ था। जर्मनी के युद्ध शत्रुओं ने युद्ध विराम के लिए जर्मनी के सामने सरकार

की बर्खास्तगी की पूर्व शर्त रखी थी। कैसर के पद छोड़ने के दो दिन बाद ही 11 नवम्बर 1918 को संधि पत्र पर हस्ताक्षर हो सके। राजनैतिक व्यवस्थाओं की एक विडम्बना यह होती है कि जब संकट नहीं सुलझता है तो सत्ता अपने कटु आलोचकों के हाथ में सौंपनी पड़ती है और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि युद्ध की समाप्ति के समय फैले गंभीर सामाजिक असंतोष को कम करने की राजनीतिक दृष्टि और वैधता सोशल डेमोक्रेट्स (एस.पी.डी) के पास ही थी। 1917 में रूस की घटनाओं से प्रेरित होकर जर्मन सामाजिक जनतंत्र के अति वामपंथी पक्ष ने सत्ता हथियाने के लिए योजना बनानी शुरू की। स्पार्टासिस्ट के नाम से प्रसिद्ध इस धड़े ने 1918-19 की शीतऋतु में बर्लिन में एक विद्रोह का आयोजन किया। जिसके दौरान सरकार के सोशल डेमोक्रेट प्रभारी चांसलर एलबर्ट ने अपने एक मात्र बचाव के तहत सेना से समझौता किया। सेना ने इसका इस्तेमाल उनसे शांति समझौता करने और मजदूरों के विद्रोह को दबाने के लिए किया। इस समझौते के परिणामस्वरूप जर्मनी के एक सर्वाधिक संकीर्णवादी संगठन को हमेशा के लिए स्थायित्व प्रदान हो गया।

सोशल डेमोक्रेट्स द्वारा सत्ता प्राप्त करने और उसके बाद फ्रेकॉपर्स (विघठित सैनिकों से निर्मित) द्वारा रोजा लक्जेमबर्ग और कार्ल लेबनेख्त जैसे स्पार्टा नेताओं की हत्या के बाद जर्मन सोशल डेमोक्रेसी के वामपंथी और दक्षिणपंथी धड़ों के बीच संबंध हमेशा के लिए विच्छेद हो गया। 1919 में जर्मनी में चारो ओर क्रांति का माहौल था और इस दौरान कई मजदूर संघ बने और हैमबर्ग तथा बर्लिन में सैनिक परिषदें कायम हुईं। यहां तक कि बेवरिया में थोड़े समय के लिए सोवियत गणतंत्र भी स्थापित हुआ। इसके बाद साम्यवादी दल (के.पी.डी) की स्थापना हुई जिसने 'सोशल डेमोक्रेटिक' गणतंत्र को विद्रोह द्वारा हटाने के कई प्रयत्न किए। 1923 में मुद्रा स्फीति तेजी से बढ़ी और फ्रांस तथा बेल्जियम ने रूर पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। 1920 में एक विद्रोह हुआ और अक्टूबर 1923 में हैमबर्ग में साम्यवादियों ने आंदोलन किए जिसके बाद कुछ समय के लिए मार्शल लॉ (सैनिक कानून) लगा दिया गया। साम्यवादियों द्वारा सत्ता के आधिपत्य के लगातार सोवियत नुमा प्रयत्नों के कारण तनाव तीखा हो गया, मध्यवर्ग और संकीर्णवादी तत्वों के मन में भय समा गया और इसके कारण अर्थव्यवस्था ध्रुवीकरण का माहौल व्याप्त हो गया। यह स्थिति तब और बिगड़ गई जब विघटित सैनिक साम्यवादी और सोशल डेमोक्रेट्स पर युद्ध में धोखाघड़ी का आरोप लगाने लगे और उन्होंने लोगों को बताना शुरू किया कि युद्ध में हारने का एक प्रमुख कारण यह था कि इन्होंने पीठ में छुरा भोंका था (पीठ में छुरा भोंकने का कुख्यात सिद्धांत यही था)। वर्साय की संधि के बाद स्थिति और भी बिगड़ गई, जब विजेता शक्तियों ने जर्मनी से युद्ध का हर्जाना मांगा जिसमें जर्मनी को भारी राशि अदा करनी थी, अपनी सेना की शक्ति और सैनिकों की संख्या में भारी कटौती करनी थी और जर्मनी के प्रमुख औद्योगीकृत और खनिज समृद्ध क्षेत्रों पर भी उनका अस्थाई आधिपत्य हो गया था।

27.4 नाजी पार्टी का गठन और आरंभिक वर्ष

1919 में एन्त्रेन ड्रेक्सलर ने म्यूनिख में जर्मन वरकर्स पार्टी की स्थापना की। सैद्धांतिक स्तर पर इसमें सामाजिक सुधारवाद, अतिराष्ट्रवाद, स्लाव और यहूदियों के खिलाफ घृणा और हार की जिम्मेदारी किसी और पर थोंपने की नीति काम कर रही थी। हिटलर को ऊपर उठाने में ड्रेकसलर ने अहम भूमिका निभाई और वह जनता के बीच उत्तेजना फैलाने के लिए कुख्यात हो गया। सेनाधिकारी अर्नस्ट रोम उसके आरंभिक साथियों में से था जिसने बाद में स्ट्रॉमटूपर्स (एस.एस) का नेतृत्व किया। 1920-21 में हिटलर इस दल के नेता के रूप में उभरा और उसने इसे जर्मन नेशनल सोशलिस्ट वरकर्स पार्टी (एन.एस.डी.ए.पी) का नाम दिया। इसका कार्यक्रम सुधारवादी और अंधराष्ट्रवादी था। इसमें निम्नलिखित कार्यक्रम शामिल किए गए:

- ज्यादा जमीन और उपनिवेश वाला बृहद जर्मनी,
- वर्साय संधि की शर्तों का उन्मूलन
- न्यासों और व्यापार का राष्ट्रीयकरण
- बड़ी कम्पनियों के मुनाफे में हिस्सेदारी
- अनर्जित आय की समाप्ति

- भूमि सुधार, और
- छोटे व्यापारियों को पट्टे पर दुकानें देना। संसद की ताकत को बढ़ाने की भी बात की गई थी परंतु 1933 में सत्ता में आने के बाद ये सभी सुधारवादी नारे भुला दिए गए।

1922-23 में वाइमार गणतंत्र संकट की स्थिति से गुजर रहा था। मुद्रा व्यवस्था के असफल हो जाने से मुद्रा स्फीति आसमान को छू रही थी और सितम्बर 1923 में एक पाउंड का विनिमय मूल्य 15 मिलयिन मार्क हो गया था। जनवरी 1923 में जर्मनी द्वारा हर्जाने का भुगतान न कर पाने के कारण फ्रांसीसी सेना ने रूर पर कब्जा कर लिया। सितम्बर में गुस्टेव स्ट्रेसमेन नया चांसलर बना और उसने वर्साय की संधि की शर्तों को मानने की नीति अपनाई जिससे दक्षिणपंथी नाराज हो गए। इसी समय 1922 में रोम में मुसोलिनी मार्च की सफलता से प्रभावित होकर हिटलर ने फील्ड मार्शल लुडेनडार्फ जैसे वरिष्ठ सेना अधिकारियों की सहायता से नवम्बर 1923 में सत्ता हथियानी चाही। हालांकि एक संस्था के रूप में राइकवैर वाइमार के प्रति निष्ठावान रहा और दंगों में 16 नाजी मारे गए। हिटलर को कैद की सजा सुनाई गई और 1924 में उसका ज्यादा समय जेल में ही बीता। इसी दौरान उसने अपनी प्रमुख पुस्तक *'मेन कैम्फ'* लिखी। यह किताब 1924 में प्रकाशित हुई जो उसकी लेबेनसरम (जर्मनी वासियों के लिए जीने की राह) की अवध ारणा, एक पूर्वी साम्राज्य, नस्लों और राष्ट्रों के बीच संघर्ष और पूंजीवाद तथा साम्यवाद दोनों के लिए अन्तरराष्ट्रीय यहूदी षडयंत्र संबंधी सिद्धांतों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। हिटलर ने लिखा है कि संसदीय जनतंत्र 'प्रकृति के आधारभूत अभिजातंत्रीय सिद्धांतों के खिलाफ एक धब्बा है'; 'लगभग सभी मानवीय संस्कृति आर्यों की सर्जनात्मक प्रतिभा का प्रमाण है केवल वे ही सभी उच्च मानवीयता के स्थापक हैं।' उसने यह भी लिखा है कि 'रूसी बोलशेविकों के प्रयत्नों को 20 वीं शताब्दी में यहूदियों द्वारा दुनिया में अपना वर्चस्व कायम करने के इच्छा के रूप में देखा जाना चाहिए।'

हिटलर के बंदी बनाए जाने के बाद नाजी पार्टी पर प्रतिबंध लगा दिया गया। हिटलर 24 दिसम्बर को जेल से छूटा। 1925 में प्रतिबंध हटा लिया गया और इस दल को पुनर्गठित किया गया और हिटलर इसका पहला सदस्य बना। उसने उत्तर में ग्रिगेर स्ट्रेसर द्वारा नियंत्रित 'वाम' शाखा पर तेजी से अपना नियंत्रण स्थापित किया जहां उसकी मुलाकात गोयबेल्स से हुई जिसने अंत तक उसका साथ दिया। नए गॉलेटर (जिला नेता) नियुक्त किए गए । एस.ए का नया अध्यक्ष बनाया गया और नेता की सर्वसत्तात्मक भूमिका तय की गई। फरवरी 1926 में हिटलर ने हैमबर्ग के उद्योगपतियों से मुलाकात की और अपने सुधारवादी और साम्यवादी विरोधी नारों से उनका मन जीत लिया। 1928 में गोयबेल्स ने प्रजातंत्र के बारे में जो बात कही थी वह स्पष्ट रूप में प्रजातंत्र के प्रति नाजियों की अवमानना को स्पष्ट करता है। उसने कहा था कि "हम वाईमार प्रजातंत्र को उसके ही हाथों पंगु बनाने के लिए राईखस्टाग के उप-प्रधान बने हैं। यदि प्रजातंत्र ने हमें इस उद्देश्य के लिए यात्रा भत्ता, दैनिक भत्ता दिया है तो वह उसकी मूर्खता है ....हम उनके शत्रु के रूप में आए हैं। हम भेड़ों की खाल पहनकर आए भेड़िया हैं, हम इस प्रकार छिप कर इनके पास आए हैं ।"

27.5 संसदीय गणतंत्र का संकट

वाइमार का पहला राष्ट्रपति एबर्ट (1919-25) जिसके संविधान के तहत राइखस्टाग (जर्मन संसद) को पहले से ज्यादा अधिकार मिले। अध्यक्ष चांसलर की नियुक्ति करता था और राजाज्ञा जारी करने का आपातकालीन अधिकार उसी को प्राप्त था। आनुपातिक प्रतिनिधित्व के सिद्धांत के फलस्वरूप छोटे-छोटे दलों का गठन हुआ जिन्होंने जनमत संग्रह का प्रावधान रखने और प्रांतीय अधिकारों को सीमित करने के साथ-साथ संवैधानिक कार्यप्रणाली को नजरअंदाज किया था। एस.पी.डी और सेंटर पार्टी ने गणतंत्र का समर्थन किया था। एबर्ट की मृत्यु (1919-25) के बाद फील्ड मार्शल वोन हिनडेनबर्ग अध्यक्ष/राष्ट्रपति बना (1925-34): वह एक समर्पित राजतंत्रवादी और युंकर (प्रशा का भूपति वर्ग) सेनाध्यक्ष था। जिसका कार्यकाल जर्मनी में प्रजातंत्र के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ।

इस गणतंत्र की स्थापना के बाद 1922-23 का संकट समाप्त हो गया। स्ट्रेसमेन सरकार ने रूर से फ्रांसीसी सेना को वापस भेजने में सफलता प्राप्त की, मुद्रा को स्थायित्व प्रदान किया, मित्र राष्ट्रों के साथ डॉस योजना पर समझौता किया जिसके तहत हर्जाने की रकम को स्वीकार्य स्तरों तक कम किया गया और विदेशी मुद्रा कर्ज के रूप में प्राप्त हुई जिसकी काफी जरूरत थी और दिसम्बर 1925 में ब्रिटेन और फ्रांस के साथ लोकार्नो

समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसके द्वारा जर्मनी ने अपनी पश्चिमी सीमा अंतिम रूप से निर्धारित कर ली। मार्च 1926 में जर्मनी को लीग ऑफ नेशन्स में शामिल कर लिया गया। 1929 की यंग योजना में मुआवजे की राशि और कम कर दी गई और फ्रांस तथा ब्रिटेन निर्धारित समय से पांच साल पहले ही 1930 में राइनलैंड से अपनी फौज हटा लेने को राजी हो गए। दूसरी ओर बेरोजगारी बहुत ज्यादा थी, विदेशी निवेश पर निर्भरता काफी अधिक थी और जर्मन कृषि में अवरोध उत्पन्न हो गया था। राजनैतिक अस्थिरता व्याप्त थी, किसी भी दल को बहुमत प्राप्त नहीं था और 1919 तथा 1928 के बीच 15 सरकारें बदलीं और दक्षिणपंथी और वामपंथी सुधारवाद की ओर लोगों का आकर्षण बढ़ा। इसके अलावा दक्षिणपंथी जनवाद का वरिष्ठ सेनाधिकारियों पर प्रभाव बढ़ रहा था और वे वर्साय संधि के निरस्त्रीकरण के प्रावधानों को नापसंद करते थे।

अमेरिकी ऋण की वापसी, निर्यात बाजार की समाप्ति और औद्योगिक उत्पादन के ढहने से अक्टूबर 1929 में हुए वॉल स्ट्रीट कैश का जर्मनी पर प्रभाव पड़ा। 1932 में बेरोजगारी 5.6 मिलियन तक पहुंच गई। करों में कमी होने और बेरोजगारी भत्ता बढ़ने से सरकार के ऊपर वित्तीय बोझ बढ़ गया जिसे संभालने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ रहा था। मई 1928 में हुए चौथे जर्मन संसद के चुनाव में आशावादी परिणाम सामने आया जिसमें नाजियों को 419 में से 12 सीट ही प्राप्त हो पाए और एस.पी.डी 22 सीटों की बढ़त लेकर 153 की संख्या तक पहुंच गया। के.पी.डी के पास 54 सीटें थीं (एस.पी.डी और के.पी.डी के पास कुल मिलाकर 42% सीटें थीं)। मूलर के नेतृत्व में वामपंथी दलों की एक साझा सरकार बनी परंतु यह आर्थिक नीति पर एकमत नहीं हो सकी। राज्य का संकट सुलझ नहीं सका। मार्च 1930 में मूलर के इस्तीफे के बाद वाईमार के संसदीय युग का अंत हो गया। सेंटर पार्टी के हेनरिक ब्रुनिंग नए चांसलर बने और उसने धारा 48 का उपयोग करके अलोकप्रिय वित्तीय नीतियों को लागू करना शुरु किया जिसमें अध यक्षीय राजाज्ञा से कानून बनाने का अधिकार था। इस संवैधानिक संकट के परिणामस्वरूप जर्मन संसद को भंग कर दिया गया। इसके बाद मुद्रा स्फीति को कम करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए जैसे बेरोजगारी भत्तों को कम कर दिया गया, कर बढ़ा दिया गया और उन्हें राजाज्ञा द्वारा लागू किया गया। मजदूरी कम किए जाने से लोगों की कय शक्ति भी कम हुई। सितम्बर 1930 में ब्रुनिंग ने अपनी नीतियों को आजमाने का प्रयत्न किया। पांचवे जर्मन संसद के चुनाव में नाजियों को भारी सफलता मिली और उन्हें 107 सीटें प्राप्त हुईं। उनके वोट में 800 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अपने नरमपंथी सहयोगियों का सहयोग समाप्त होने पर ब्रुनिंग को एस.पी.डी के शिथिल सहयोग पर भरोसा करना पड़ा।

इसी समय राजनैतिक तनाव भी बढ़ रहा था और एस.ए तथा साम्यवादियों के बीच दंगे हो रहे थे। यह बिलकुल स्पष्ट था कि पुराने संकीर्णवादी गठबंधन उलट गए थे और अब हिटलर अच्छी स्थिति में था। अप्रैल 1932 में एस.ए पर प्रतिबंध लागने के सरकारी प्रयत्न पर संभ्रांत वर्ग के नाजी समर्थक काफी नाराज हुए जिसमें कैसर विलियम का पुत्र भी शामिल था। राष्ट्रपति हिन्डेनबर्ग ने मई 1932 में ब्रुनिंग को हटाकर फ्रिज वोन पेपेन को चांसलर बनाया जो एक दक्षिणपंथी विचारों वाला कुलीन था। वह पहला मध्यमार्गी राजनीतिज्ञ था जिसने हिटलर से सहायता ली थी। एस.ए से प्रतिबंध हटा लिया गया, प्रशा में एस.पी.डी प्रांतीय सरकार हटा दी गई, और जर्मन संसद को एक बार फिर भंग कर दिया गया। चुनाव में काफी हिंसा हुई। एस.ए ने अपने वास्तविक और अनुमानित शत्रुओं पर हमला किया। छठे जर्मन संसद में नाजियों को 230 सीटें और 37 प्रतिशत मत प्राप्त हुए। एस.पी.डी को 133 और के.पी.डी को 39 सीटें प्राप्त हुईं। हिन्डेनबर्ग अभी भी हिटलर को चांसलर बनाने से हिचक रहा था जबकि हिटलर इसे पाने के लिए कटिबद्ध था। हिटलर ने वोन थाइसेन और हलमर शेख्त जैसे उद्योगपतियों और बैंकरों के साथ राइखलैंडबंड, जो प्रशा के भूमिपतियों का एक संगठन था, के सदस्यों का समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया। शीघ्र ही पेपेन ने नवम्बर 1932 में एक बार फिर चुनाव की घोषणा कर दी। सातवें जर्मन संसद के इस चुनाव में नाजी वोट में कमी आई और इस बार उन्हें पिछली बार से 34 सीटें कम यानी 196 सीटें प्राप्त हुईं। एस.पी.डी 121 और के.पी.डी को 100 सीटें प्राप्त हुईं। इसके बाद थोड़े समय के लिए रक्षा मंत्री श्लेखर ने पेपेन को चासंलर के पद से हटा दिया और इस दौरान उसने जर्मन संसद को भंग कर आपातकाल की घोषणा करने का प्रयत्न किया। जनवरी 1933 में कई राजनैतिक उथल-पुथल के बाद यह समझौता हुआ कि एक संकीर्णवादी साझा सरकार बनेगी और हिटलर को चांसलर बनाया जाएगा। 12 सदस्यी सरकार में केवल तीन नाजी सदस्य

थे और संकीर्णवदियों का यह मानना था कि वामपंथियों को दबाने में वे हिटलर का उपयोग कर सकेंगे। हिटलर ने उन्हें बुरी तरह निराश किया। उसने सत्ता पर अपनी पकड़ मजबूत की, सभी वास्तविक और संभावित विरोधियों को कुचल दिया और एक अतिकेंद्रित राज्य की स्थापना की। मार्च 1933 में आठवें जर्मन संसद के लिए चुनाव सम्पन्न हुआ। नाजियों ने 288 सीटों पर जीत हासिल की, के.पी.डी ने 81 सीटें जीतीं (उन सबों को तुरंत अयोग्य करार दिया गया) और एस.पी.डी को 120 स्थानों पर विजय मिली।

1928 और 1933 के बीच पांच आम चुनाव हुए। एन.एस.डी.ए.पी की सदस्यता 1925 में 27,000 थी जो 1926 में 49,000, 1927 में 72,000, 1928 में 108,000 और 1929 में 178,000 हो गई अर्थात केवल 5 वर्षों में 559 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई। इस अचानक हुई वृद्धि के क्या कारण थे। निश्चित रूप से गणतंत्रवाद की असफलता और लोगों की सेवा करने के लिए विभिन्न राजनैतिक दलों में एकजुट होने की इच्छाशक्ति के अभाव के कारण ऐसा हुआ। स्टालिनवादी के.पी.डी के उग्रवादी वामपंथी रूख ने दक्षिणपंथियों के समान ही 'व्यवस्था' पर आक्रमण किया और आर्थिक संकट के कारण वैचारिक माहौल गहरे रूप में प्रभावित हुआ, राज्य के विभिन्न अंगों का अधोपतन हुआ और न्यायपालिका से भी लोगों का भरोसा उठने लगा क्योंकि वे दक्षिणपंथी सुधारवादियों को बचाने के लिए उनका पक्ष लेने लगे। (1930 के वसंत में चला लेपजिग मुकदमा इसका एक उदाहरण है, जिसमें सेना के तीन अधिकारियों पर देशद्रोह का आरोप लगाया गया था। हिटलर उनके पक्ष में उपस्थित हुआ और उसने न्यायालय को अपने नियंत्रण में लेने की धमकी दी, सजा केवल 18 महीने चलनी थी)। मार्क्स के विचारों पर बल देते हुए डेविड अब्राहम बताते हैं कि जर्मनी पर केवल पूंजीवादी उत्पादन के विकास का ही बुरा प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि इसके अधूरेपन से भी इसको नुकसान पहुंचा। उन्होंने ईस्ट एलबियन जंकर्स के राज्य नीति पर असंतुलित प्रभाव का विश्लेषण किया जिन्होंने प्रमुख पद हथिया लिए थे और वे एक प्रकार से शासक वर्ग की तरह कार्य करते थे। हालांकि राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 15 प्रतिशत से भी कम था और कृषि जनसंख्या कुल जनसंख्या की एक चौथाई से भी कम थी। वयस्क मताधिकार लागू होने से किसानों का राजनैतिक महत्व बढ़ गया और देहातों में संबंधों में परिवर्तन हुए। इसके अलावा संभ्रांत वर्गों के विभिन्न धड़ों में जमकर संघर्ष होने लगा। कृषि क्षेत्र और उद्योग क्षेत्र के बीच भिड़ंत हुई और पुराने भारी उद्योगपतियों और नए तथा गतिशील पूंजी आधारित उद्योगों के बीच प्रतिस्पर्द्धा सामने आई। चूंकि इन सभी धड़ों ने राजनैतिक साझा, संगठित श्रम, व्यापार और राजकोषीय नीतियों और मुआवजे पर अलग-अलग दृष्टिकोण व्यक्त किया अतः राज्य, जनतांत्रिक संस्थाओं के मद्दे नजर, उनके बीच काम चलाऊ संतुलन स्थापित न रख सकी। बुर्जुआ वर्ग के विभाजित हो जाने के बाद युंकरों ने एक साथ मिलकर राज्य और सेना नौकरशाही पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। 1929 के बाद निर्णय लेने वाले स्थानों की भी कमी पड़ गई क्योंकि संसद, विभिन्न दल, यहां तक कि केंद्रीय मंत्री भी अप्रासंगिक होते चले गए और आर.डी.आई (जर्मन उद्योग संघ) जैसे नैगमिक हित राज्य पर अपना प्रभाव जमाने लगे।

व्यापक मंदी के युग में जब एस.पी.डी ने मजदूर वर्गों के हितों को अपने कार्यक्रमों में शामिल किया तो बुर्जुआ वर्ग के लोग सावधान हो गए। आर्थिक और वित्तीय संकट के कारण सामाजिक सहयोग की लागत काफी बढ़ गई थी और हर्जाने की रकम के कारण प्रभुत्वशाली वर्ग के लिए स्थिति असहनीय हो रही थीं। पूंजीपतियों ने एस.पी.डी के साथ समझौता और प्रतिस्पर्द्धा का अपना कार्यक्रम छोड़ दिया जो 1925 और 30 के बीच स्थायित्व का कारण बना था। बार-बार चुनाव कराया जाना सत्ता के संकट को ही प्रतिबिंबित करता है। इसके कारण पूरे युग में अस्थिरता रही। एक बार यह स्पष्ट हो जाने पर कि नाजी सामाजिक व्यवस्था का समर्थन करेंगे, प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों ने पार्टी को विभिन्न भागों में विभाजित करने और इसे एक जनतंत्र आधार प्राप्त करने के विचार को स्वीकार किया और उन्हें यह कहकर राज्य का जिम्मा सौंपने का आह्वान किया कि वे राज्य को लोकप्रिय आधार प्रदान करवाएंगे जिसकी 1930 में सख्त कमी थी। पिछले वर्षों में वाईमार गणतंत्र के संकट को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि राज्य प्रभुत्वशाली वर्गों के हितों को संगठित करने में काफी हद तक असफल रहा था। वे मनमाने ढंग से कार्य करते थे। यह गणतंत्र मौजूदा सामाजिक संबंधों की रक्षा करने में असफल रहा। यहां कोई क्रांतिकारी खतरा नहीं था बल्कि प्रभुत्वशाली वर्गों के विभिन्न धड़ों के आपसी संघर्ष और परस्पर विरोधों के कारण यह स्थिति सामने आई। इसके अलावा पिछले वर्षों में अपनाई गई अस्पष्ट नीतियां भी इसके लिए जिम्मेदार थीं।

बोध **प्रश्न** 1

1) जर्मन फासीवाद का आधार कहे जाने वाले तत्वों पर 5 पंक्तियां लिखिए।

2) नाजी पार्टी की स्थापना और कार्यक्रम पर 10 पंक्तियां लिखिए।

3) किन परिस्थितियों में नाजी पार्टी ने सत्ता हस्तगत की ?

27.6 नाजियों का राजनैतिक दृढ़ीकरण

23 मार्च 1933 को एनैब्लिंग ऐक्ट (राईख और जनता की मुश्किलों को दूर करने के लिए निर्मित कानून) पारित किया गया। यह हिटलर की तानाशाही का कानूनी आधार बना। विधायी शक्ति कार्यकारी को सौंप दी गई, राजनैतिक रूप से गैर जरूरी और 'अनार्य' (जो आर्य प्रजाति से नहीं थे) प्रशासनिक अधिकारियों को नौकरी से निकाल दिया गया। राज्य का पुराना संघीय ढांचा राईख राज्यपालों की नियुक्ति करके नष्ट कर दिया गया। 31 मार्च को इस अधिनियम का उपयोग करते हुए सभी डायटों को भंग कर दिया गया और चुनाव में हुए मतदानों के आधार पर विधान सभाओं (एसेम्बली) को फिर से पुनर्गठित किया गया। 4 फरवरी 1933 को एक राजाज्ञा के द्वारा मूलभूत संवैधानिक अधिकारों को निलंबित कर दिया गया। 27 फरवरी 1933 को जर्मन संसद में आग लगने के बाद दूसरे दिन आपातकाल की घोषणा कर दी गई। युद्धोत्तर न्यूरेमबर्ग मुकदमे के एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार जर्मन संसद में आग लगाने की योजना गोयबेल्स ने बनाई थी और गैस्टापो के पूर्व प्रमुख ने यह भी कहा कि आग लगाने के पहले ही गोरिंग ने मरने वालों की सूची

बना ली थी। इन सबों के बावजूद और मई में पार्टी की इमारतों की नाकेबंदी, इसके अखबारों को बंद करने आदि के बावजूद एस.पी.डी ने मई 31 में हिटलर की विदेश नीति का समर्थन किया। 2 अगस्त 1934 में हिन्डेनबर्ग का देहान्त हो गया और हिटलर ने राष्ट्रपति का पद भी संभाल लिया और इसके बाद से सभी सैनिकों को फ्यूहरर और चांसलर की शपथ लेनी होती थी।

हिटलर ने स्टार्म ट्रूपर्स को स्वायत्त सुधारवादी संस्था के रूप में विकसित करने का प्रयत्न किया जिससे यह पता चल गया कि पार्टी (दल) और स्टेट (राज्य) को एक दूसरे से मिलाना चाहता था। एक बार फ्यूहरर (हिटलर इसी नाम से जाना जाता था) के हाथ में पूर्ण सत्ता आ जाने के बाद अर्नेस्ट रोयम ने चेतावनी देनी शुरू की (मध्य 1933 से) कि क्रांति में अवरोध पैदा हो रहा है। उसने 500,000 लोगों की मजबूत स्ट्रॉम ट्रूपर्स पर अपना आधिपत्य जमाने का प्रयास किया और इसे संकीर्णतावादी संभ्रांत सेना के खिलाफ खड़ा किया। इन कारणों से हिटलर की बहुत चल न सकी। रोयम ने सलाह दी कि सशस्त्र सेनाओं एस.ए और एस.एस सभी योद्धा समूहों को नए रक्षा मंत्रालय के तहत समान दर्जा प्रदान किया जाए और उन्हें पीपुल्स आर्मी के रूप में संगठित किया जाए। जून 1934 में हिटलर ने एस.एस को आदेश दिया कि एस.ए के नेताओं को चुन-चुन कर मार दिया जाए और रोयम को अपनी देख रेख में गिरफ्तार करवाया जिसे बाद में कारावास में गोली मार दी गई। यह दल एक ऐसे मशीन में रूपांतरित हो गई जिसने नीचे से उठने वाली आवाजों को निर्ममता से दबाया और लोगों को राज्य के सर्वोच्च नेता के प्रति पूर्ण समर्पण के लिए राजी किया। यह बदलाव और जगहों पर भी नजर आया। 1935 में 5.1 प्रतिशत नौकरीपेशा लोग और 3.8 प्रतिशत किसान नाजी पार्टी के सदस्य थे, 1933-34 तक 20 प्रतिशत असैनिक कर्मचारी और 30 प्रतिशत शिक्षक इसके सदस्य बन चुके थे। 1 जनवरी 1934 को एन.एस.डी.ए.पी को जर्मनी की एक मात्र राजनैतिक पार्टी घोषित किया गया और अन्य दल संगठित करने को फौजदारी कानून के अन्तर्गत दंडनीय अपराध माना गया। अगले कुछ वर्षों में इसके सुधारवादी तत्व दबते चले गए और हिटलर का शासन परम्परागत संकीर्णवादी अवधारणाओं और नाजी आंदोलन से प्रभावित होता गया।

27.7 तीसरे राईख में राज्य और समाज

नाजी शासन के प्रथम 18 महीनों में दल एकाधिकार, केंद्रीकृत सरकारी तानाशाही और व्यक्तिगत निरंकुशता जैसे शक्ति के तीन केंद्रों के बीच तनाव और अस्थिर संतुलन बना रहा। दल/एस.ए की सुधारवादी शक्तियों ने संकीर्णतावादियों की 'नियंत्रात्मक' नीति पर विजय प्राप्त करने में हिटलर की मदद की। बीच-बीच में वह पक्ष बदलता रहा और उसने सुधारवादियों द्वारा सत्ता प्राप्त करने की प्रक्रिया को रोकने के लिए राज्य शक्ति का उपयोग किया। क्रांति और प्रतिक्रांति की विरोधी प्रक्रियाओं के कारण उसकी निरंकुशता को बल मिला। उसने अपनी इस तानाशाही का उपयोग राज्य के भीतर के हितों के टकराव को रोकने के लिए नहीं किया बल्कि इससे सम्पूर्ण ढांचे में एक अराजकता का माहौल व्याप्त हुआ। गेस्टापो (*द गेहेम स्टाट्सपोलिजी या राज्य की खुफिया पुलिस*) को अधिक महत्व दिया गया। और उसे आन्तरिक प्रशासन से अलग कर दिया गया। इसका अर्थ यह हुआ कि वह मंत्रालय से संस्थागत रूप से स्वतंत्र हो गया। ब्लोमबर्ग फ्रित्ख और बेक जैसे आर्थिक और सैनिक विशेषज्ञों (वरिष्ठ सेनाध्यक्ष जो राइनलैंड पर कब्जा करने जैसे सैन्य अभियानों से अलग मत रखते थे) और पंचवर्षीय योजना के संयोजक स्शाख्त जैसे लोगों को मदमुक्त कर दिया गया। इससे राज्य के आंतरिक विघटन का पता चलता है। ब्लोमवर्ग फ्रितख जैसे संकीर्णवादी आलोचकों को समाप्त करने के लिए हिटलर अक्सर ब्लैक मेल करने की नीति अपनाता था। वह प्रशासन की बारीकियों और कायदे कानूनों से चलने का आदी नहीं था और वह बड़े ही मनमाने ढंग और सैनिक शैली में काम करता था। कभी-कभी इनका अर्थ भी समझ में नहीं आता था और इसका असर निर्णय पर पड़ता था। इस प्रकार के कार्यकलाप का नकारात्मक असर कानून और प्रशासन पर पड़ा। मंत्रिमंडल में कई मंत्री थे जो कमोबेश सीधे फ्यूहरर के प्रति समर्पित थे। सरकार अलग-अलग विभागों की बहुतंत्र बन कर रह गई और विभागीय आदेशों और नीतियों के द्वारा शासन चलाया जाने लगा। अब हम इस प्रकार की शासन पद्धति की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा करने जा रहे हैं।

चित्र 1: हिटलर भाषण देते हुए

27.7.1 न्यायपालिका की अधीनस्थता

वाईमार गणतंत्र को इसके बड़े-से बड़े शत्रुओं ने भी कभी औपचारिक रूप से समाप्त नही किया। बिडम्बना

यह है कि इसे मिटाने के लिए इसके ही संविधान का उपयोग किया गया। एनेबलिंग ऐक्ट के पारित होने के बाद राज्य का न्यायिक आधार ही बदल गया। तीसरा राइख (या तीसरा साम्राज्य–पहला रोमन साम्राज्य तथा दूसरा बिस्मार्क का काल माना जाता है) ने गर्व के साथ यह घोषणा की थी कि 'हिटलर ही कानून है'। इसमें विधि आधारित राज्य को व्यक्ति/नेता आधारित राज्य या फ्यूरेस्टेट (नेता पर आधारित राज्य) के रूप में परिवर्तित करने के लिए सिद्धांत गढ़े गए। नेता को अतिरिक्त वैधानिक अधिकार दिए गए। सैनिक तथा असैनिक सेवाओं में काम करने वाले लोगों को नेता के प्रति निष्ठावान रहने के लिए शपथ लेनी पड़ती थी। प्रशासनिक कार्य पद्धति में इसका महत्व तेजी से बढ़ा और संवैधानिक कार्य पद्धति को तिलांजलि दे दी गई। प्रजातंत्र में जनता की इच्छा सर्वोपरि होती है परंतु इस व्यवस्था में नेता की इच्छा को ही सब कुछ मान लिया गया और उसकी वाणी को कानून का दर्जा प्राप्त हो गया। सभी न्यायाधीशों को नाजी न्यायाधीश संगठन में शामिल होना पड़ता था और तनिक भी संदेह होने पर उन्हें हटा दिया जाता था। जर्मन संसद के अग्निकांड के साम्यवादी आरोपियों में से 3 आरोपी जब सबूत के अभाव में छोड़ दिए गए तब देशद्रोह के सारे मामले उच्च न्यायालय से लेकर नव निर्मित पीपुल्स कोर्ट में स्थानांतरित कर दिए गए जिसके 7 सदस्यी न्यायपीठ में 5 नाजी थे। इस ट्रिब्यूनल ने अधिकांश लोगों को मृत्यु दंड दिया। राजनैतिक अपराध के सभी मामले साधारण न्यायालय से लेकर विशेष न्यायालय को सौंप दिए गए।

27.7.2 गस्टैपो

खुफिया राज्य पुलिस कार्यालय या गस्टैपो की स्थापना प्रशा के आन्तरिक मंत्रालय के तहत 1933 में हुई थी और तेजी से यह प्रांतीय सरकार से स्वायत्त होता चला गया। 1934 में हेनरिक हिमलर राष्ट्र-व्यापी गस्टैपो का अध्यक्ष बना। रेनहार्ड हेडरिक प्रशा शाखा का अध्यक्ष बना जो कुख्यात एस.एस के दलीय खुफिया संगठन एस.डी का भी प्रभारी था। पूरे देश में एस.डी के लगभग 100,000 भेदिए फैले हुए थे और अन्य गतिविधियों के अलावा वे यह पता लगाते थे कि हिटलर को न मानने वाले कितने लोग हैं। एस.एस का उदय 1920 के दशक के आरंभ में हिटलर के निजी सुरक्षा दस्ता के रूप में हुआ (क्योंकि हिटलर को एस.ए की निष्ठा पर भी पूरा विश्वास नहीं था) और 1931 में नाज़ियों की आंतरिक अनुशासनात्मक कार्यकारी समिति बन गया। 1935 में प्रशा सर्वोच्च न्यायालय ने यह घोषणा की कि गस्टैपो के निर्णयों की न्यायिक समीक्षा नहीं की जा सकती थी। संक्षेप में हेडरिक को किसी भी जर्मन के जीवन और मौत के निर्णय करने का अधिकार मिल गया। 1936 में हिमलर एस.एस का सर्वोच्च प्रमुख बन गया। राज्य पुलिस और दलीय खुफिया संगठनों पर एक साथ नियंत्रण होने से घरेलू आतंकतंत्र अपने आप में स्वतंत्र हो गया और एस. एस स्टेट की स्थापना का आधार बना जिसने आगे आने वाले वर्षों में अपना राजनैतिक प्रशासन और नौकरशाही सेना की इकाइयां और कत्ले-आम करने के लिए तंत्र का विकास किया। आर.एस.एच.ए या राईख सुरक्षा कार्यालय इसकी केंद्रीय एजेंसी थी जिसका मुखिया हेडरिक था। पूर्वी यूरोप के आधिपत्य वाले क्षेत्रों में एस.एस खासतौर पर सक्रिय था।

27.7.3 मजदूर और किसान

नई शासन व्यवस्था की नीतियों के कारण कामगार लोगों का जीवन गहरे रूप में प्रभावित हुआ। नाजियों की अर्थव्यवस्था में राज्य के हस्तक्षेप के कीन्स सिद्धांत के सैनिक रूपांतरण के चलते बेरोजगार लोगों की संख्या में तेजी से कमी आई जो 1932 में छ: मिलियन से घटकर 1936 में एक मिलियन से भी कम रह गई। 1937 तक राष्ट्रीय उत्पादन 102 प्रतिशत बढ़ गया। शासन व्यवस्था ने इस अर्थव्यवस्था को 'युद्ध अर्थव्यवस्था' के रूप में परिभाषित करना शुरु कर दिया और अन्तिम युद्ध की तैयारी करने लगे। 21 मई 1935 को रक्षा कानून पारित हुआ जिसमें ह्यालामार शाख्ट को युद्ध अर्थव्यवस्था के लिए आर्थिक दूत बनाया गया जिसका मुख्य कार्य वर्साय की संधि के उल्लघंनों को छिपाना था। व्यापारियों ने नाजियों का समर्थन किया था और अब उन पर भारी कर लगाया गया था, 'विशेष सहयोग' देने के लिए कहा गया और राईख इकोनॉमिक चेम्बर का अनिवार्य तौर पर सदस्य बनना पड़ा। परंतु भारी उद्योग खासकर अस्त्र-शस्त्र उद्योग को भारी मुनाफा हुआ। वास्तविक अर्थों में मजदूरी घटी और हड़तालें बन्द हो गईं। इसका कारण यह था कि सभी मजदूर संघों के आन्दोलनों और वामपंथी राजनैतिक संगठनों खासकर सोशलिस्ट डेमोक्रेटिक पार्टी और के.पी.डी को कुचल दिया गया था।

मालिकों द्वारा नियुक्त न्यासी मजदूरी निर्धारित करते थे (उनकी नियुक्ति के संबंध में मजदूरों से कोई सलाह नहीं ली जाती थी) अधिक काम और अधिक उत्पादन को ही आय बढ़ाने का आधार घोषित किया गया।

हालांकि बेरोजगारी में गिरावट आई पंरतु राष्ट्रीय आय में जर्मन मजदूरों का हिस्सा 1932 में 56.9 प्रतिशत से गिर कर 1938 में 53.6 प्रतिशत हो गया। पूंजी से हुई आय 17.4 से बढ़कर 26.6 प्रतिशत हो गई। लगभग पूर्ण रोजगार के कारण मजदूरी और वेतन से हुई कुल आय में 66 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई। परंतु व्यापार से होने वाली आय और गैर पूंजी में 146 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अक्टूबर 1934 में श्रमिक मोर्चा बनाया गया जिसे जर्मनों का सर्जनात्मक संगठन कहा गया। इसका ऊपरी रूप मजदूर संघ का था परंतु यह मूलतः एक प्रचार तंत्र था जिसमें नियोक्ता और पेशेवर लोग शामिल थे। अधिक से अधिक काम करना इसका कथित उद्देश्य था और इसके पदाधिकारी नाजी होते थे। इसके नियमों में सामंती मूल्य भी शामिल किए गए। नियोक्ताओं को अपने मजदूरों का ख्याल रखना था और उन्हें अपने नियोक्ताओं के प्रति निष्ठावान रहने के लिए कहा गया। सरकारी राजाज्ञा द्वारा मजदूरों के आवागमन की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और उन पर नौकरशाही और नियोक्ताओं का एक समान नियंत्रण होता था। मनोरंजन से शक्ति प्राप्त करने के आंदोलन के तहत लाखों लोगों को नियंत्रित मनोरंजन प्रदान किया गया और विशाल नौकरशाही ने लाखों की धन राशि गबन द्वारा प्राप्त की जिसमें मजदूर मोर्चा के नेता डॉ ले भी शामिल थे।

1933 में युद्ध के बाद कृषि से होने वाली आय सबसे कम थी और ऋण का बोझ 12 बिलियन मार्क्स था। हिटलर के अधिकांश लोकवादी जनोत्तेजक भाषण किसानों को ही संबोधित होते थे परंतु नाजियों ने कभी भी जंकरों के भूस्वामित्व को छेड़ने की कोशिश नहीं की। 29 सितम्बर 1933 के खेती कानून के तहत 125 हेक्टेयर तक के सभी खेतों को अभिजात्य अनुवांशिक परिसम्पदा का दर्जा दिया गया। किसान मुख्यतः अपनी जमीन से ही जुड़े रहे परंतु उन्हें भी कृषीय उत्पादों के मूल्यों में हुई बढ़ोत्तरी से थोड़ा फायदा हुआ।

27.7.4 महिलाएं

महिलाओं और परिवार के प्रति नए शासन का दृष्टिकोण अति संकीर्णवादी पितृसत्तात्मक और नाजी दर्शन के नस्लवादी जैववाद संबंधी दृष्टिकोण से प्रभावित था। इस दल ने अध्यादेश जारी कर सबसे पहले सभी संगठनों में उच्च पदों से महिलाओं को हटा दिया। महिलाओं की सामाजिक भूमिका के लिए 'किन्डर, किर्च और कुच' (बच्चे, चर्च, रसोई) का नारा दिया गया। ऐसी सामाजिक और आर्थिक स्थिति पैदा की गई कि उन्हें अपने आजीविका के लिए मजदूर बनना पड़ा। 1933 में जर्मनी में कुल मजदूरों की संख्या 37 प्रतिशत महिलाओं की संख्या थी। एक ही योग्यतावाली महिला मजदूर को पुरुष मजदूर की तुलना में समान काम के लिए 66 प्रतिशत कम मजदूरी मिलती थी। 1933 में विश्वविद्यालयों में कुल विद्यार्थियों में 20 प्रतिशत विद्यार्थी छात्राएं थीं। नाजी शासन ने एक नियम पारित कर इसकी संख्या 10 प्रतिशत तक घटा दी। युद्ध छिड़ने के साथ ही इस घोषणा को रद्द कर दिया गया। गोयबल्स ने कहा था कि इस दुनिया में सुन्दर बच्चों को लाना महिलाओं का मुख्य काम है और उसने यह भी कहा था कि सार्वजनिक जीवन से इसीलिए उन्हें अलग किया जा रहा है ताकि वे अपनी गरिमा पुनः प्राप्त कर सकें। शुद्ध नस्ल के बच्चे पैदा करना नाजियों के जुनून में शामिल था और अधिक से अधिक बच्चे पैदा करने के लिए कई प्रकार के वित्तीय और विचारधारात्मक सहायता प्रदान की गईं। विवाह ऋणों का इन्तजाम किया गया, बड़े आकार के परिवारों के माता-पिताओं को बच्चा पालने के लिए वित्तीय सहायता दी गई और 4,6,8 बच्चों की माताओं को कांस्य, रजत, और स्वर्ण सम्मान पदक प्रदान किए गए। इन नीतियों के साथ-साथ मानसिक रूप से विकलांग लोगों, शारीरिक रूप से विकृत लोगों, वधिर या नेत्रहीन लोगों की जबरदस्ती नसबंदी करा दी गई और यहूदी मिश्रित भ्रूणों को गिरा दिया गया। परिवार को बड़ा करने के अपने तमाम विचारधारात्मक वादों के बावजूद वास्तविकता यह थी कि शांति काल में तलाक की दर तेजी से बढ़ी, और बाल अपराध में वृद्धि हुई। एक बार युद्ध शुरु हो जाने पर महिला श्रमिकों पर निर्भरता बढ़ी और युद्ध के मैदान में अधिक से अधिक पुरुषों की जरूरत पड़ने लगी। इसी समय हिमलर के आदेश पर एस.एस कार्यकर्ता स्वयं और शुद्ध नस्ल वाले जर्मनों की मदद से अविवाहित महिलाओं को अवैध रूप से गर्भवती करने लगे ताकि वे फ्यूहरर (हिटलर) के लिए शुद्ध नस्ल के बच्चे पैदा कर सकें।

27.7.5 कला और साहित्य पर प्रतिबंध

नाजी उदारवादी और मिली जुली संस्कृति के बिलकुल खिलाफ थे। मई 1933 से गोयबेल्स की देखरेख में पुस्तकें जलाई जाने लगीं। स्टीफेन स्वैग, इ.एम रमार्क, एलबर्ट आइंस्टाइन और ह्यूगो प्रौइस जिसने वाईमार संविधान लिखा था की पुस्तकें इसमें शामिल की गईं। एच.जी.वेल्स, सिगमन फ्रायड, आंद्रे गिड, एमिल जोला

और अपटन सिंक्लेयर जैसे विदेशी लेखकों पर प्रतिबंध लगाया गया। किसी भी पश्चिमी देश में संस्कृति को इस प्रकार नियंत्रित नहीं किया गया था। सांस्कृतिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र जैसे ललित कला, संगीत, रंगमंच, साहित्य, अखबार, रेडियो और फिल्म के क्षेत्र में चैम्बरों की स्थापना की गई जिनके निर्णय को कानून का दर्जा प्राप्त था। यहूदियों को सांस्कृतिक जीवन से अलग कर दिया गया और सेजाने, वैन गोग, गाडगिन और पिकासो जैसे चित्रकारों के 65,000 चित्र कला वीथियों और संग्रहालयों से हटा दिए गए। एक जर्मन कला संस्थान का निर्माण किया गया। इस कला विध्वंस के प्रति जनता की प्रतिक्रिया को इसी बात से जाना जा सकता है कि नाजियों द्वारा प्रतिबंधित मार्डन आर्ट (जिसे नाजी पतित कला कहते थे) पर हुई प्रदर्शनी की लोकप्रियता के कारण उसे बन्द कर देना पड़ा।

27.7.6 प्रेस

समाचार पत्र, पत्रिकाएं गोयबेल्स के पूर्ण नियंत्रण में थे। उसने इसके लिए निर्देश जारी कर रखे थे और उसके मौखिक आदेश भी अखबार पर नियंत्रण रखते थे। राजनैतिक और नस्ली तौर पर सम्पादकों को 'शुद्ध' होना पड़ता था। उदारवादी और यहूदियों के अखबारों को जबरन बन्द कर दिया गया। 1933 और 37 के बीच दैनिक समाचार पत्रों की संख्या 3,607 से घटकर 2,671 हो गई। पूर्व सार्जेन्ट मैक्स अमन जर्मन प्रेस का वित्तीय तानाशाह बना और प्रतिदिन 25 मिलियन के वितरण (पत्र-पत्रिकाएं) का दो तिहाई हिस्सा नाजियों के सीधे नियंत्रण में आ गया। रेडियो और चलचित्रों को राज्य के अधिप्रचार का साधन बनाया गया। फिल्मों पर इतनी ज्यादा चुटकी ली जाने लगी कि आन्तरिक मंत्री को यह चेतावनी देनी पड़ी कि सिनेमा देखने वाले दर्शक समुचित व्यवहार करें।

27.7.7 शिक्षा नीति

जर्मनी की शिक्षा नीति नात्सी पार्टी के एक सैनिक तरीके पर संगठित दल (जो लोगों को असंगठित करने के लिए इस्तेमाल किए जाते थे) के हवाले की गई। यह सामाजिक जीवन पर नाजीवाद के पड़ने वाले विनाशकारी प्रभाव का एक संकेत मात्र था। 30 अप्रैल 1934 को एस.ए. का एक स्थानीय नेता बर्नहाडरस्ट विज्ञान, शिक्षा और लोकप्रिय संस्कृति मंत्री बना जबकि इसी रस्ट को 1930 में विक्षिप्त मानसिकता के लिए विद्यालय के शिक्षक पद से हटा दिया गया था। प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय तक के पाठ्यक्रम को नाजीवादी विचारों से भर दिया गया। स्थानीय प्राधिकारों और प्रांतीय सरकारों के शिक्षा संबंधी अधिकार समाप्त कर दिए गए। पाठ्य पुस्तकें फिर से लिखी गईं और *मेन कैम्फ* (हिटलर की पुस्तक) शिक्षा का केंद्रीय बिंदु बन गया। शिक्षकों को नाजी शिक्षक संघ में शामिल होना पड़ता था और हिटलर के प्रति निष्ठा रखने की शपथ लेनी पड़ती थी। विश्वविद्यालय और विद्यालय के अधिकांश शिक्षक अतिसंकीर्णवादी और शामी विरोधी दृष्टिकोण रखते थे और विद्यार्थियों को नाजीवाद की घुट्टी पिलाकर उन्होंने वाईमार गणतंत्र की प्रतिष्ठा कम करने में काफी मदद की। कुछ उदारवादी प्रोफेसर भाग गए या जहां उन्होंने शरण ली उन्हें मार दिया गया। कुछ अन्य लोगों ने हार मान ली। इनमें प्रसिद्ध दार्शनिक हेडेगर भी शामिल थे जो युद्ध के अन्त तक नाजी पार्टी के सदस्य बने रहे। एक समकालीन पर्यवेक्षक ने इन सारी गतिविधियों को देखते हुए टिप्पणी की थी कि "चारों ओर वेश्यालय का परिदृश्य था जिसने जर्मन शिक्षा की सम्मानजनक इतिहास को दागनुमा बना दिया"।

यहूदियों को अध्यापन से मुक्त कर दिया गया। पाठ्यक्रम में नस्ल विज्ञान की पढ़ाई की जाने लगी जिसमें नस्लवाद के सिद्धांत के तहत यह बताया जाने लगा कि आर्य-जर्मन नस्ल सर्वोत्तम और सर्वोत्कृष्ट है और यहूदी सभी बुराइयों को जन्म देने वाले हैं (1905 से 1931 तक दस जर्मन यहूदियों को विज्ञान में नोबल पुरस्कार मिला था)। आइंस्टाइन और फ्रैंक (भौतिक विज्ञान) और हेबर और वारबर्ग (रसायन विज्ञान) जैसे महान शिक्षकों को या तो बर्खास्त कर दिया गया या नौकरी से निकाल दिया गया था या देश छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया गया। जो बच गए वे 'जर्मन' भौतिक शास्त्र और गणित आदि पढ़ाने लगे। एक प्रोफेसर ने आधुनिक भौतिक विज्ञान को यहूदियों द्वारा जर्मन विज्ञान के विध्वंस करने के औजार के रूप में व्याख्यायित किया। सापेक्षता के सिद्धांत (आइंस्टाइन की खोज, जो एक यहूदी था) को एक षड्यंत्र कहकर खारिज किया गया। नाजीवाद के छह वर्षों के बाद विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या 127, 920 से घटकर 58,325 हो गई; और प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम पढ़नेवाले छात्रों की संख्या 20,474 से घटकर 9554 हो गई। शिक्षा के स्तर में तेजी से गिरावट आई। 1937 तक आते-आते युवा संगठनों में 6 से लेकर 21 वर्षों तक के 7.7 मिलियन सदस्य शामिल हो गए। जिन अभिभावकों ने विरोध करना चाहा उन्हें धमकी दी गई कि वे अपने बच्चों से हाथ धो बैठेंगे। योग्य युवा नाजियों को 'आर्डर कैसेल' में नियुक्त कर लिया गया।

27.7.8 धार्मिक असहिष्णुता

नाजीवाद के सैद्धांतिक आह्वान की भावोत्तेजक प्रकृति को देखते हुए उसके द्वारा लोकप्रिय धार्मिक मतों पर नियंत्रण स्थापित करने की चेष्टा पर बहुत आश्चर्य नहीं होना चाहिए। वैसे हिटलर एक कैथोलिक था परंतु ज्यादा से ज्यादा यह कह सकते हैं कि चर्च के प्रति उसका यह दृष्टिकोण उपयोगितावादी था। नाजी पार्टी के कार्यक्रम में सकारात्मक ईसाई धर्म की आवश्यकता पर बल दिया गया था। 20 जुलाई 1933 को वैटिकन के साथ एक संधि हुई जिसमें चर्च को अपना कार्य करने की स्वतंत्रता दी गई; हालांकि व्यवस्थित रूप से इसका उल्लंघन किया गया। परंतु इस समझौते से तीसरा राईख को एक सम्मानजनक स्थिति प्राप्त हुई जिसकी उसे अत्यंत आवश्यकता थी और इसके नेताओं के लिए यह आक्रामक रूख अपनाने का एक संकेत था। 30 जुलाई 1933 को कैथोलिक यूथ लीग को भंग कर दिया गया। अगले कुछ वर्षों में हजारों कैथोलिक पुजारी, नन और भक्तों को गिरफ्तार किया गया और 1934 में कई प्रमुख नेताओं की हत्या कर दी गई। 14 मार्च 1937 को पोप पायस XI ने "विथ वर्निंग सौरो" (दहकती पीड़ा के साथ) नाम से एक सार्वभौम पत्र जारी किया और नाजी सरकार पर संधि के उल्लंघन का आरोप लगाया। इसमें आरोप लगाया गया कि नाजी घृणा, निन्दा आदि का बीज बो रहे हैं और ईसा मसीह तथा चर्च के खिलाफ शत्रुता का रवैया अपना रहे हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि विनाशकारी धार्मिक युद्ध के तूफानी बादल चारों ओर मंडरा रहे हैं जिनका उद्देश्य विध्वंस के सिवा कुछ भी नहीं हो सकता। जैसे-जैसे चीजें सामने आईं वैसे-वैसे शासन की प्रकृति के बारे में ये बातें सही सिद्ध होने लगीं।

प्रोटेस्टेन्ट परम्परा के भीतर भी मतभेद मौजूद थे परंतु नाजीवाद लूथरवादी शामीविरोधी पूर्वाग्रहों से ग्रस्त था (मार्टिन लूथर कट्टर यहूदी विरोधी था और सत्ता के प्रति पूर्ण निष्ठा में पूर्णतः विश्वास रखता था)। धर्मांध नाजियों ने जर्मन क्रिश्चन फेथ मूवमेंट जैसी पृथक धर्म सभाओं का आयोजन किया। हिटलर ने व्यक्तिगत तौर पर साइनोड के चुनाव में हस्तक्षेप किया जिसमें राईख विशप का चुनाव किया गया। हालांकि निजी तौर पर वह प्रोटेस्टेंट को छुद्र व्यक्ति और कुत्ते के समान दब्बू कहा करता था। "जर्मन क्रिश्चन" के बर्लिन नेता ने ओल्ड टेस्टामेंट को त्यागने की वकालत की और कहा कि इसें पशु के व्यापारियों और दलाली के सिवा कुछ भी नहीं था। उसने न्यू टेस्टामेंट के पुनर्लेखन की बात की और राष्ट्रीय समाजवाद की मांग को देखते हुए ईसा मसीह के उपदेशों को संशोधित करने की मांग की। पैस्टर निमोलर, जिन्होंने 1930 की घटनाओं का स्वागत किया था का एक वर्ष के अन्दर मोह भंग हो गया। उसने 'कॉन्फेसनल चर्च' का विरोध किया और उसने शामी विरोध की आलोचना की तथा राज्य के हस्तक्षेप को समाप्त करने की मांग की। सैकड़ों पुरोहित गिरफ्तार किए गए, मार डाले गए या यातना शिविरों में भेज दिए गए। 1 जुलाई 1937 को अपने अन्तिम उपदेश के बाद निमोलर गिरफ्तार कर लिए गए। उन्होंने अपने इस उपदेश वक्तव्य में ये स्मरणीय शब्द कहे थे "मनुष्य के आदेश पर अब हमें अधिक देर तक मौन धारण नहीं किए रहना चाहिए जबकि ईश्वर हमें बोलने का आदेश दे रहा है"। वे 1945 तक यातना शिविरों में पड़े रहे। हालांकि कुल मिलाकर चर्च शासन के प्रति निष्ठावान रहा और उसने अपने सभी पुरोहितों को फ्यूहरर के प्रति निष्ठा की शपथ लेने का आदेश दिया। युद्ध के दौरान जर्मनी के राष्ट्रीय राईख चर्च के 30 सूत्री कार्यक्रम में नाजी चर्च की नीति का उल्लेख किया गया था जिसमें इसाई धर्म के उपदेशों और बाइबल के प्रकाशनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया और चर्च की वेदी पर केवल मेनकैम्फ की प्रति और तलवार रखने की बात की गई थी।

27.8 यहूदियों का नरसंहार

यहूदियों की योजनाबद्ध हत्या हिटलर के शासन का सबसे दमनात्मक पक्ष था। नाजी पार्टी के दर्शन में यहूदियों के प्रति घृणा और आर्य शुद्धता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। 15 सितम्बर 1935 के न्यूरेमबर्ग कानून के तहत यहूदियों से जर्मन नागरिकता छीन ली गई और उन्हें "मातहत" का दर्जा प्रदान किया गया। यहूदियों और आर्यों के बीच वैवाहिक या विवाहेतर संबंध रखने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। अगले कुछ वर्षों में तीन और कानून बनाकर उन्हें समाज से पूरी तरह बहिष्कृत कर दिया गया। बर्लिन ओलम्पिक के दौरान आधे यहूदी बेरोजगार हो गए थे। सामाजिक वहिष्कार की बात खुलमखुल्ला की जा रही थी और चारों ओर साइन बोर्ड और होर्डिंग पर ये बातें कूर रूप में लिखी होती थीं। 1933 और 1938

के बीच (9 नवम्बर 1938 के कुख्यात क्रिस्टल नाइट का वर्ष) 50,00,00 में से लगभग आधे से ज्यादा यहूदी देश छोड़कर बाहर चले गए। "आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही दृष्टियों से जर्मन स्वर्ग की ज़ड़ें गहरे रूप में यहूदी नर्क से जुड़ी हुई थी।" (ग्रंडेनबर्ग, 579)

एस.ए के अधीन सबसे पहला यातना शिविर 1933 में बनाया गया। जून 1934 में रोयम के शुद्धिकरण के बाद यातना शिविर एस.एस के हाथों में सौंप दिया गया और वहां मौत के सौदागरों के हाथ में कमान थमा दी गई। डखाउ आ विट्ज और बुखेवाल्ड जैसे अज्ञात गांवों और शहरों के नाम कुख्यात हो गए। कत्लेआम की शुरुआत 1938 और 1941 के बीच हुई जब तथाकथित सुख-मृत्यु के नाम पर मानसिक रूप से विकलांग 70,000 जर्मनों को मार दिया गया। 1941 के उत्तरार्द्ध में यातना शिविर में काम न कर पाने वाले व्यक्तियों का भी यही अंत हुआ –15,000 यहूदियों को जहरीली गैस से मार डाला गया। मार्च 1942 में पोलैंड के ल्यूबिन जिले में बेलजेक गैस चेम्बर द्वारा जन हत्या का सिलसिला शुरू हुआ। यहूदी दास मजदूरों को चुन-चुन कर मशीनगन से भून दिया गया। आउशविज-विरकेन्यू सबसे बड़ा यातना शिविर था जहां 2 से 3 मीलियन यहूदियों के साथ-साथ जिप्सियों, पोलैंड वासियों और रूसी बंदियों की हत्या कर दी गई। ये हत्याएं किसी व्यक्तिगत कुंठा, आंतरिक कलह, किसी समाधान या युद्ध की अनिवार्यता के उद्देश्य से नहीं की जा रही थी। इन हत्याओं के पीछे नाजी दर्शन का जैविक आधारित उन्माद काम कर रहा था। अत: यह अतीत में हुए सभी प्रकार की आतंकवादी क्रांतियों या युद्धों से अलग था। यहां लोगों की व्यवस्थित रूप से हत्या की गई जिसमें व्यक्तिगत राग-द्वेष का कोई स्थान नहीं था। लोगों को इसलिए मारा गया क्योंकि ऐसा समझा जाता था कि वे छुद्र मानव थे, "कीड़े-मकोड़े" थे। कृषक हिमलर ने एक जैविक बीमारी की तरह इस समस्या का समाधान किया।

अपनी प्रसिद्ध जीवनी *हिटलर* में जोएखिम फेस्ट ने बताया है कि "हिटलर के शासन को अलग-थलग करके नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि उसे विस्तृत रूप में फैली सामाजिक क्रांति के आतंकवादी या जैकोबिन चरण के रूप में देखा जाना चाहिए जिसने जर्मनी को बीसवीं शदी में ढकेला और जो आज भी जारी है।" इसके अनुसार हिटलर के आने के साथ ही जर्मनी में 19 वीं शताब्दी का अंत हो गया। अपने पुरानपंथी के बावजूद वह अपने संकीर्णवादी विरोधियों की अपेक्षा अधिक आधुनिक था क्योंकि वह परिवर्तन की आवश्यकता को समझता था।

सर्वसत्तात्मक नेता राज्य की इच्छा के अनुसार प्रतिष्ठित संस्थान नष्ट कर दिए गए, लोगों के परम्परागत रहन-सहन, सोच और अधिकार को नकार दिया गया, विशेषाधिकार समाप्त कर दिए गए और हिटलर से उद्भूत या संरक्षित न होने वाले सभी प्राधिकारों को कुचल दिया गया। इसी के साथ हिटलर अतीत से संबंध विच्छेद से होने वाले भय या उत्सुकताओं को दबाने में सफल रहा।

चित्र 2: यहूदियों की दुकानों का बहिष्कार करने हेतु नाज़ी धरना पट्टिका पर लिखा है: जर्मन वासियों जवावी हमला करो यहूदियों से मत खरीदो!

फेस्ट के अनुसार हिटलर के शासन के दौरान क्रांति को उसके नैतिक या प्रगतिशील आवरण से मुक्त कर दिया गया। आधुनिकता संबंधी अपनी आवधारणा, परिवर्तन की आवश्यकता और 19वीं शताब्दी का संबंध 'प्रगति' की सकारात्मक अवधारणा से जोड़ते हुए वह खुद परस्पर विरोधी बातें करता है। उसने अपनी प्रशस्ति में नाजीवाद और स्टालिनवाद की तुलना करने का भी प्रयत्न किया और उसने लिखा कि सोवियत संघ में स्टालिन में भी व्यक्ति आधारित सर्वसत्तात्मकता नजर आती है और राष्ट्रपति रूजवेल्ट की काम करने की शैली भी निरंकुशतावादी थी। इसका जवाब देते हुए जे.पी स्टर्न ने इस प्रकार की तुलना की असंगति पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि मार्क्सवाद और हिटलर के शासन में एक मूलभूत अंतर यह था कि मार्क्सवाद मानवीय समानता पर आधारित था जबकि हिटलर का शासन नस्ली साम्राज्यवाद पर केंद्रित था जिसमें यहूदियों, जिप्सियों और अन्य लोगों को छुद्र मानवों की श्रेणी में डालकर उनकी हत्या कर दी गई। अन्तत: तीसरा राईख का काला इतिहास व्यावहारिक और भौतिक कारणों के आधार पर किसी भी प्रकार के तर्कसंगत विश्लेषण को पूरी तरह नकारता है। स्टर्न के अनुसार "हिटलर का उद्देश्य विजय प्राप्त करना नहीं बल्कि जन हत्या करनी थी। नाजी शासन के एक अन्य विद्वान कहते हैं कि तीसरा राईख की तुलना दो मुहें बंदूक से की जा सकती है जिसका एक रूख बीसवीं शताब्दी की ओर था और दूसरा वर्साय की सामाजिक संधि की ओर; एक नली से पूर्व-औद्योगिक अतीत का मोह व्यक्त हो रहा था और दूसरे से युद्ध की तैयारी हो रही थी।" (ग्रनबरगर, 328)

चित्र 3: नाजी यातना शिविर का एक चित्र, जहां यहूदियों की हत्या की गई थी

बोध प्रश्न 2

1) नाजी पार्टी के शिक्षा और धर्म के प्रति नजरिए का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

2) आपके अनुसार नाजी शासन की आधारभूत विशेषताएं क्या हैं ?

....

....

....

....

....

27.9 सारांश

अति केंद्रीयता, चर्च, सेना तथा न्यायपालिका जैसी संस्थाओं पर नियंत्रण, नेता के प्रति निष्ठा और जैविक आधारों पर यहूदियों और जिप्सियों से घृणा, आर्यों की श्रेष्ठता में विश्वास आदि जर्मन फासीवाद के कुछ प्रमुख लक्षण हैं। हालांकि इसका जन्म यूरोप के युद्धोतर काल के खास संदर्भ में हुआ था परंतु इसकी जड़ें 19वीं शताब्दी तक जाती हैं। वर्साय में जर्मनी का अपमान, 1920 के दशक में राजनैतिक अस्थिरता और 1929 की मंदी ने जर्मन फासीवाद के एक संगठन नाजी पार्टी के उदय के लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा कर दी। इसने उन जर्मनों को खासतौर पर प्रभावित किया जिनका राष्ट्रवाद बीसवीं शताब्दी की घटनाओं से आहत हुआ था।

एक बार सत्ता में आ जाने के बाद फासीवाद का भयानक चेहरा सामने आया। किसी भी प्रकार के विरोध को कठोरतापूर्वक कुचल दिया गया। न्यायपालिका को अधीनस्थ बना लिया गया। हिटलर के हाथों में सम्पूर्ण सत्ता आ गई। हिटलर के राजनैतिक विरोधियों को पहचानने के लिए खुफिया पुलिस (गस्टैपो) का उपयोग किया गया। नाजियों की आर्यों की नस्ली और जैविक श्रेष्ठता की अवधारणा को राजनीतिक व्यवस्था में शामिल कर लिया गया। महिलाओं को सभी महत्वपूर्ण पदों से हटा दिया गया। नाजी विचारधारा के तहत सभी यहूदियों को अभूतपूर्व भेदभाव का सामना करना पड़ा। उनसे जर्मन नागरिकता छीन ली गई। यहूदियों और जिप्सियों को यातना शिविर में डालकर मारा जाने लगा। 2 से 3 मीलियन यहूदियों को केवल एक यातना शिविर में मार डाला गया।

27.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 27.2

2) देखिए भाग 27.4

3) इस प्रश्न का उत्तर देते समय वाईमार गणतंत्र के संकट, आर्थिक संकट के प्रभाव और इसके बाद की राजनैतिक अस्थिरता का जिक्र कीजिए। देखिए भाग 27.5

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 27.7.7 और 27.7.8

2) एक सर्वसत्तात्मक शासन, राज्य और एक दल के प्रति समाज की पूरी मातहतता, फ्यूहरर के हाथों में सभी शक्ति, महिलाओं के खिलाफ संकीर्ण और भेदभावपूर्ण व्यवहार, कला, साहित्य और संस्कृति के अन्य रूपों पर राज्य का पूरा नियंत्रण, शिक्षा का मात्र नाजी अधिप्रचार के रूप में प्रयोग, धार्मिक असहिष्णुता और इनसे सबसे बढ़कर यहूदियों से घृणा और उनकी सामूहिक हत्या। देखिए भाग 27.7 और 27.8